महिला महाविद्यालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना पं० मदन मोहन मालवीय जी ने सन् १९२९ में 'स्त्री उच्च शिक्षा के ध्येय' से वीमेंस कॉलेज (वर्तमान में महिला महाविद्यालय) को स्थापित किया। जहाँ महामना के आदर्शों के अनुरूप एक ही छत्र के नीचे छह संकायों- कला, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान, दृश्य कला, मंच कला एवं शिक्षा- के अन्तर्गत ३६ विषयों के पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण शिक्षा समाविष्ट है। कला, सामाजिक विज्ञान, एवं विज्ञान (प्रतिष्ठा व आनर्स) में त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम सेमेस्टर पद्धति में नियोजित है। बायोइन्फार्मेटिक्स तथा गृह विज्ञान विषयों में स्नातकोत्तर द्विवर्षीय पाठ्यक्रम चार सेमेस्टर में सम्पन्न होता है। 'भरतनाट्यम' और 'कत्थक' नृत्य विषय में त्रिवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम की भी व्यवस्था है। निश्चित रूप से २००० छात्राओं से समन्वित यह संस्था पठन-पाठन की गुणवत्ता और शोधपरक गतिविधियों के नैरंतर्य से शिक्षा को उर्ध्व दिशा की ओर संचालित कर रही है। महिला महाविद्यालय के समग्र सदस्य इसके आलोक स्तम्भ को सुदृढ़ करने के लिए सदैव कटिबद्ध हैं।

महिला महाविद्यालय की योग्य छात्राओं ने वर्ष २०११ में विश्वविद्यालय की परीक्षा में संस्था को गौरवान्वित करते हुए अपनी अमिट छाप छोड़ी है। संकाय सदस्यों की नियमित एवं आत्मनियोजित अध्यापन तथा छात्राओं के गंभीर चेष्टा के परिणाम स्वरूप ५० छात्राओं ने विश्वविद्यालय की बी०ए०, बी०एससी०, एम०एससी० एवं नृत्य डिप्लोमा की परीक्षाओं में सर्वोच्च दस स्थान अधिकार करने की योग्यता हासिल की है।

अकादमिक गतिविधियाँः महिला महाविद्यालय के सदस्य कक्षाओं में पढ़ाने के साथ-साथ अत्यधिक उत्साह से शोध कार्य सम्पन्न करते हैं। उनके ३७ अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्र प्रकाशित हुए हैं। चार वरिष्ठ प्रोफ़ेसर- प्रो० सुशीला सिंह, प्रो० मीना सोढ़ी, प्रो० संध्या सिंह कौशिक एवं प्रो०गीता राय ने अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में अध्यक्ष पद को सुशोभित किया तथा अन्य कई सदस्यों ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में अपने तथा अन्य विश्वविद्यालयों में व्याख्यान् प्रस्तुत किये।

- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं डी०एस०टी० के द्वारा प्रदत्त १.५७ करोड़ की वित्तीय सहायता उपलब्ध करके डॉ० रश्मि सिंह, डॉ० राधा चौबे, डॉ० अरुण कुमार सिंह, डॉ० हृदयेश मिश्रा एवं डॉ० संजय कुमार श्रीवास्तव शोध परियोजनाओं में कार्यरत हैं।
- डॉ० नीलम श्रीवास्तव एवं उनकी टोली (टीम) ने महिला महाविद्यालय की प्रयोगशाला में ही नवीन प्रायोगिक खोज की है कि ०.२ वोल्ट पर पानी इलेक्ट्रोलाइज्ड हो जाता है। टी०आइ०एफ०ए०सी० तथा डी०एस०टी० ने इसे अनुमोदित किया है। इसकी उपलब्धियों को भारत में पेटेन्ट करने के लिए पेटेंटिंग एजेन्सी में भेज दिया गया है। डॉ० नीलम का शोधपत्र 'कार्बोहाइड्रेट पॉलिमर' भी प्रकशित हुआ है। 'नेचर इंडिया' जरनल में इसका रिव्यू प्रकाशित हुआ।
- डॉ० मिताली देव को संस्कृत में अवन्तिका राजीव गाँधी एक्सलेन्स अवार्ड-२०११ एवं पूर्वांचल रत्न अलंकारम् सम्मान-२०१२ से नवाज़ा गया है।
- 'गाँधी की प्रासंगिकता एवं उनकी कालातीत विरासत' विषय पर २०-२१ मार्च २०१२ में राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन प्रो० रूपा शाह (पूर्व कुलपति, एस०एन०डी०टी० विश्वविद्यालय एव बी०एच०यू० कोर्ट की सदस्य) ने किया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति पद्मश्री डॉ० लालजी सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। गाँधी वाङ्मय की अध्यक्षता डॉ० वर्षा दास एवं विषय मर्मज्ञ प्रो० सुधीर कुमार ने विद्वत्तापूर्ण व्याख्यानों की प्रस्तुति की। समापन सत्र में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० पृथ्वीश नाग ने गाँधी के राजनीतिक यात्रा को सचित्र प्रस्तुत करते हुए अध्यक्षीय उद्बोधन किया। संगोष्ठी का यह विषय युवा पीढ़ी को गाँधी के विचार और दर्शन से परिचय कराने में सफल सिद्ध हुआ। इसके परिणाम स्वरूप दो दिनों में १०७ शोध पत्रों की प्रस्तुति सम्पन्न हुई।
- बायोइन्फॉर्मेटिक्स विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला में मई २०११ में डॉ० पी० अशोकन एवं आई०आई०टी० मुंबई की फोसी परियोजना की टोली ने 'पिथॉन साइन्टिफिक लैग्वेज प्रोग्रामिंग' के तहत शोध छात्रों को प्रशिक्षण दिया इसकी पुनरावृत्ति ३० अप्रैल एवं १-२ मई २०१२ में हुई। इस अवसर पर डॉ० प्रभा रामचन्द्रन, डॉ० श्रीकांत पाठक एवं डॉ० पी० विमल आमंत्रित वक्ता थे।